वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 329
ISBN 978-93-80353-68-5

श्री पंचकल्याणक विधान

(लघु)

–रचयित्री–

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका
युगप्रवर्तिका गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
(माघ शु. 11 से फाल्गुन कृ. तृतीया तक) के अवसर पर प्रकाशित
14 फरवरी से 20 फरवरी 2011

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2537	मूल्य
1100 प्रतियाँ	माघ शुक्ला एकादशी	16/-रु.
	14 फरवरी 2011	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

जैन जगत् की श्रमण परम्परा में बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने साधु जीवन में अथाह श्रुतवारिधि का मंथन कर विपुल साहित्य का सृजन किया है। आपने अष्टसहस्री जैसे क्लिष्टतम न्यायग्रंथ की सरल भाषा टीका लिखकर उसे विद्वानों के लिए बोधगम्य बनाया है। युवाओं के लिए रोचक औपन्यासिक शैली में पौराणिक कथानकों को प्रस्तुत कर उनमें धर्म के प्रति रुचि जागृत की है। बाल-विकास जैसी प्राथमिक शिक्षा की पुस्तकों की रचना कर बालकों को संस्कारित किया है।

अनेकानेक विधानों की रचना कर आपने अनूठी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। प्रस्तुत पंचकल्याणक विधान में चौबीस तीर्थंकरों के पांचों कल्याणक से संबंधित संपूर्ण जानकारी समाहित है। विधान की प्रत्येक पंक्ति सरल, सरस, सुबोध एवं आगम सम्मत है, प्रत्येक जयमाला में जिनवाणी का सार भर दिया है। संगीत की मधुर स्वर लहरियों के साथ जब इन पूजाओं का पठन किया जाता है तो भौतिक ताप से संतृप्त प्राणीगण शीतलता का अनुभव कर आनंद विभोर हो उठते हैं।

आशा है भक्ति संगीत रसिक जन इस विधान का व्यापक प्रचार प्रसार कर अतिशय पुण्य संचित करेंगे। यह विधान सबके लिए कल्याणकारक हो यही मंगलकामना है।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

''कल्याणं करोति इति कल्याणकः'' इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो स्व और पर का कल्याण करने में समर्थ होते हैं वे तीर्थंकर महापुरुष पंचकल्याणकों से समन्वित होते हैं। तीर्थंकर के अलावा अन्य किसी महापुरुष के भी पाँच कल्याणक नहीं हो सकते हैं अथवा यूँ भी कहा जा सकता है कि जिस भव्यात्मा ने पूर्व जन्म में किसी तीर्थंकर के पादमूल-सानिध्य में दर्शन विशुद्धि आदि सोलह कारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया है वह पुनः उस भव से मरण कर स्वर्गों में या सर्वार्थ-सिद्धि आदि विमानों में जन्म लेता है। वहाँ की आयु पूर्ण कर जब माता के गर्भ में आता है तभी से गर्भ कल्याणक महोत्सव आदि प्रारंभ हो जाते हैं पुनः क्रम-क्रम से उनके जन्म कल्याणक, तप कल्याणक, ज्ञान कल्याणक और निर्वाण कल्याणक इंद्रों द्वारा ही मनाये जाते हैं।

कोई-कोई बद्धायुष्क मनुष्य तीर्थंकर प्रकृति बांधने के बाद प्रथम नरक में भी चले जाते हैं पुनः वहाँ से आयु पूर्ण कर मनुष्य भव प्राप्त कर पंचकल्याणक से युक्त तीर्थंकर होते हैं। जैसे – राजा श्रेणिक का जीव अभी पहले नरक में दुःख भोग रहा है उत्सर्पिणी के चौथे काल में इसी भरत क्षेत्र के आर्यखंड में वह ''महापद्म'' नाम से प्रथम तीर्थंकर होगा।

वर्तमान में जिन चौबीस तीर्थंकरों के नाम पढ़े जाते हैं वे इस हुण्डावसर्पिणी के तीर्थंकर हैं जो कि जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड में निवास कर रहे हैं, अभी यहाँ पंचमकाल चल रहा है। इस काल के मानव हीन – पुण्य वाले हैं अतः उन्हें साक्षात् रूप से तीर्थंकरों के दर्शन देवों के अतिशय आदि तो सुलभ नहीं हैं फिर भी आचार्यों ने उनके लिए श्रावक और मुनिधर्म के उपदेश प्रदान किये हैं जिन्हें यथाशक्ति पालन कर हम लोग मोक्षमार्ग के पथिक तो बन ही सकते हैं।

श्रावक धर्म की प्रमुख क्रिया पूजन है जो कि नित्य और नैमित्तिक के भेद से दो प्रकार की है। इसी नैमित्तिक पूजन के अंतर्गत यह ''पंचकल्याणक विधान'' श्रद्धालु भक्तों तक पहुँच रहा है। पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की सरस काव्यमयी लेखनी से यह विधान कृति निर्मित है। सन् 1991

के सरधना (जिला मेरठ-उ.प्र.) चातुर्मास के मध्य अपने व्यस्त समय में से जिनेन्द्र भक्ति में सदुपयोग किए गए कतिपय शुभ क्षणों में यह विधान रचा गया था।

इस पूजन विधान में तीर्थंकर भगवान के पाँचों कल्याणक की पाँच पूजाएँ हैं और 120 अर्घ्य हैं, 5 पूर्णार्घ्य हैं एवं 5 जयमालायें हैं। इस विधान में पंचकल्याणक की तिथियाँ आदि विषय उत्तरपुराण ग्रंथ के आधार से लिये गये हैं। पूज्य माताजी की इंद्रध्वज, कल्पद्रुम आदि महाकाव्य कृतियों से परिचित आप सभी पूजा विशारद नर-नारियों के लिए इस लघु कृति का परिचय मुझे कोई आवश्यक प्रतीत नहीं होता। मेरा तो इस विधान के विषय में मात्र इतना ही कहना है कि जिस प्रकार के शुद्ध भावों के द्वारा इन चौबीस तीर्थंकरों ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया, जिन उज्ज्वल परिणामों से पूज्य माताजी ने उनके कल्याणकों का परिचय निबद्ध कर हमें पूजा और स्वाध्याय दो कर्तव्यों का पुण्यार्जन करने का अवसर प्रदान किया है उन्हीं शुभ भावों को संजोकर निर्मल हृदय एवं शुद्ध द्रव्य से पूजन करें तथा पूजन के रहस्य को समझकर अपने मनुष्य जन्म को सार्थक करें ताकि कुछ भवों में ही पंचकल्याणक अवस्था प्राप्ति का सौभाग्य मिल सके। यदि ऐसा अवसर भी न मिले तो कम से कम पंचकल्याणक महोत्सव मनाने वाले इंद्र पद का पुण्य तो संचित ही कर लें क्योंकि वे भी नियम के एक भवावतारी होते हैं। अतः भक्ति में तल्लीन होकर अनादि संचित कर्म बंधन को काटने हेतु यह विधान तीक्ष्ण तलवार का कार्य करने में सक्षम होगा ऐसा विश्वास है।

दो शब्द

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

पंचकल्याणक सभी तीर्थंकरों के जीवन के पाँच वे विशेष महोत्सव हैं जिन्हें स्वयं सौधर्म इंद्र अग्रसर होकर विशाल देव समूह के साथ संपन्न करता है। किन्तु तीर्थंकर भगवान उसमें अनुरंजित नहीं होते। वे तो जल से भिन्न कमल के समान सदा आत्म स्वरूप में ही लवलीन रहते हैं। केवलज्ञान के पश्चात् तो उनकी संपूर्ण क्रियाएँ – श्रीविहार, दिव्यध्वनि आदि सब अबुद्धिपूर्वक होती है।

तीर्थंकर संपूर्ण गुणों के पुंज होते हैं। जैन संस्कृति के परम आधार हैं। उनकी दिव्य ध्वनि ही जिनवाणी कहलाती है जिसके दिव्य प्रकाश में प्राणी अपने आत्मकल्याण के मार्ग को प्रशस्त करता है।

उन परम उपकारी तीर्थंकरों की भक्ति रूप में ही पूज्य माताजी ने इस पंचकल्याणक विधान की रचना की है। माताजी द्वारा लिखित पूजाओं से तो संपूर्ण भारतवर्ष का दिगम्बर जैन समाज भली-भाँति परिचित हो चुका है।

पूज्य माताजी की लेखनी में ऐसा जादू है कि वर्तमान में लाखों भक्त भक्तिरस में निमग्न होकर अपने आपको कृतकृत्य कर रहे हैं तथा अनेकों नास्तिक भी आस्तिक बन गये हैं। विधान पूजन के क्षेत्र में माताजी ने अद्भुत क्रांति उत्पन्न कर दी। देश भर में माताजी के लिखे विधानों की धूम मची हुई है। वृहद् स्तर पर नगर-नगर में, शहर-शहर में कहीं इंद्रध्वज, कहीं कल्पद्रुम, कहीं सर्वतोभद्र विधान हो रहे हैं। शांति विधान, ऋषिमंडल विधान, पंचपरमेष्ठी विधान आदि तो अनगिनत हो रहे हैं।

यह विधान भी जन-जन के लिए हितकर हो ऐसी मंगल कामना है तथा पूज्य माताजी की लेखनी से इसी प्रकार जिनधर्म की प्रभावना अहर्निश होती रहे यही जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना है।

विधान की रचयित्री, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991 (22 अक्टूबर, सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

सप्तम प्रातिम एवं गृहत्याग–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ(निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसीमंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।
2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।
3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।
4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।
5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।
6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।
7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।
8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।
9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली नई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।
10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।
11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।
12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य ''नंद्यावर्त महल'' तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

पंचकल्याणक विधान

मंगलाचरण

–चाल-शेर –

सिद्धों को नमूँ भक्ति से जो सिद्धिप्रदाता।
मंगल करें उत्तम जगत में शरण के दाता।।
तीर्थंकरों को नित्य धर्म तीर्थ को नमूँ।
निजात्मसुधा को चखूँ ममता सुरा वमूँ।।1।।

अतीत काल में हुए तीर्थेश अनंते।
होंगे भविष्य में भी तीर्थनाथ अनंते।।
चौबीस तीर्थंकर हुए हैं वर्तमान के।
इन सबको नमूँ बार-बार हाथ जोड़ के।।2।।

भवसिंधु में जो डूब रहे जीव अनंते।
इनको निकाल कर लगा दूँ मोक्ष के पंथे।।
भव-भव के दुःख से छुड़ाय करके इन्हों को।
शिवधाम में पहुँचा दूँ मैं इन भव्य जनों को।।3।।

इस विध दया के रस से ओतप्रोत मना जो।
करते अपाय विचय धर्मध्यान महा जो।।
वे ही परम दयालु हुए पुण्य संचते।
वर नाम कर्म प्रकृति तीर्थकर की बांधते।।4।।

इसके प्रभाव तीन लोक को भी कंपाते।
सौ इंद्र से भी वंद्य हो त्रिभुवन को नमाते।।
वे पंचकल्याणक महा वैभव को पावते।
उनकी रचूँ पूजा हृदय में उनको धारके।।5।।

इति विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं.-1

गर्भकल्याणक पूजा

–स्थापना-अडिल्ल छंद –

तीर्थंकर चौबीस तीर्थकर्ता कहे,
मुनिगण सुरगण वंद्य मुक्तिभर्ता कहे।
इनका गर्भकल्याणक उत्सव सुर करें,
हम इन पूजें यहाँ स्थापन विधि करें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-तोटक छंद –

परिपूर्ण विशुद्ध गुणांबुद्धि हो, जल से तुम पाद जजूँ मुद सों।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।1।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जीत स्वदोष भये जिन जी, हम गंध लिये तुम पूजत जी।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।2।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सित तंदुल के इत पुंज धरूं, निज अक्षय सौख्य तुरंत भरूँ।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।3।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरद्रुम के पुष्प लिये कर में, पदपद्म जजूँ भक्ती भर मैं।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।4।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी गुझिया पकवान भरें, तुम पूजत ही भव रोग हरे।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।5।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक ज्योति अंधेर हरे, तुम पाद जजूँ भ्रम दूर करे।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।6।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ध्यान अगनि में शुद्ध हुए, हम खेतव धूप विशुद्ध हुए।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।7।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अखरोट बदाम अनार भले, तुम पूजत ही फल मोक्ष फले।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।8।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य मिलाकर अर्घ किया, तुम अर्पत सौख्य अनर्घ लिया।
प्रभु गर्भकल्याणक सौख्यप्रदा, शत इंद्र जजें तुम पाद मुदा।।9।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

तीर्थंकर परमेश, तुम पदपंकज में सदा।
जग में शांती हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

महापुण्यफलराशि तीर्थंकर प्रकृती यहाँ।
मिले सर्व सुखराशि, पुष्पांजलि से पूजते।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं ऋषभदेवस्य आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।
ॐ ह्रीं अजितनाथस्य ज्येष्ठकृष्णाअमावस्यायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं संभवनाथस्य फाल्गुनशुक्लाअष्टम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं अभिनंदननाथस्य वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथस्य श्रावणशुक्लाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।
ॐ ह्रीं पद्मप्रभनाथस्य माघकृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।
ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथस्य भाद्रपदशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रनाथस्य चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।
ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथस्य फाल्गुनकृष्णानवम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।
ॐ ह्रीं शीतलनाथस्य चैत्रकृष्णाअष्टम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथस्य ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।
ॐ ह्रीं वासुपूज्यनाथस्य आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।
ॐ ह्रीं विमलनाथस्य ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।
ॐ ह्रीं अनंतनाथस्य कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।
ॐ ह्रीं धर्मनाथस्य वैशाखशुक्लात्रयोदश्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।
ॐ ह्रीं शांतिनाथस्य भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।
ॐ ह्रीं कुंथुनाथस्य श्रावणकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।
ॐ ह्रीं अरनाथस्य फाल्गुनकृष्णातृतीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथस्य चैत्रशुक्लाप्रतिपदायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथस्य श्रावणकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।
ॐ ह्रीं नमिनाथस्य आश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।
ॐ ह्रीं नेमिनाथस्य कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथस्य वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।
ॐ ह्रीं महावीरस्वामिनः आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

–पूर्णार्घ्य–

चौबीस जिनवर जहँ जहाँ से, अवतरे आये यहाँ।
जिस नगर में जिनजनक गृह, जिस मात उर तिष्ठें यहाँ।।
जिस नखत में जिस शुभतिथी, में गर्भ उत्सव सुर किया।
मैं जजूँ इन सबको यहाँ, मन वचन तन पावन किया।।25।।

–शंभु छंद–

सोलह स्वप्ने माता देखे, जब गर्भ में जिनवर आते हैं।
इंद्रों के आसन कंपते ही, वे वैभव से यहाँ आते हैं।।

माता पितु की पूजा करके, सुर महामहोत्सव करते हैं।
श्री आदि मात की सेवारत, आंगन में रतन बरसते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगर्भकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा–

जय जय श्री जिनराज, पृथ्वी तल पर आवते।
बरसें रत्न अपार, सुरपति मिल उत्सव करें।।1।।

शंभु छंद

प्रभु तुम जब गर्भ बसे आके, उसके छह महिने पहले ही।
सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से, बहुरतनवृष्टि धनपति ने की।।
मरकतमणि इंद्र नीलमणि औ, वरपद्मरागमणियाँ सोहें।
माता के आँगन में बरसें, मोटी धारा जनमन मोहें।1।।

प्रतिदिन साढ़े बारह करोड़, रत्नों की वर्षा होती है।
पंद्रह महीने तक यह वर्षा, सब जन का दारिद खोती है।।
जिनमाता पिछली रात्री में, सोलह स्वप्नों को देखे हैं।
प्रातः पतिदेव निकट जाकर, उन सबका शुभ फल पूछे हैं।।2।।

पतिदेव कहें हे देवि! सुनो, तुम तीर्थंकर जननी होंगी।
त्रिभुवनपति शतइंद्रों वंदित, सुत को जनि भव हरणी होंगी।।
ऐरावत हाथी दिखने से, तुमको उत्तम सुत होवेगा।
उत्तुंग बैल के दिखने से, त्रिभुवन में ज्येष्ठ सु होवेगा।।3।।

औ सिंह देखने से अनंत बल युक्त मान्य कहलायेगा।
मालाद्वय दिखने से सुधर्ममय उत्तम तीर्थ चलायेगा।।
लक्ष्मी के दिखने से सुमेरु गिरि पर उसका अभिषव होगा।
पूरण शशि से जन आनंदे, भास्कर से प्रभामयी होगा।।4।।

द्वयकलशों से निधि का स्वामी, मछली युग दिखीं-सुखी होगा।
सरवर से नाना लक्षण युत, सागर से वह केवलि होगा।।

सिंहासन को देखा तुमने उससे वह जगद्गुरु होगा।
सुर के विमान के दिखने से, अवतीर्ण स्वर्ग से वह होगा।।5।।

नागेन्द्र भवन से अवधिज्ञान, रत्नों से गुण आकर होगा।
निर्धूम अग्नि से कर्मेंधन, को भस्म करे ऐसा होगा।।
फल सुन रोमांच हुई माता, हर्षित मन निज घर आती हैं।
श्री ह्री धृति आदिक देवी मिल, सेवा करके सुख पाती हैं।।6।।

पति की आज्ञा से शची स्वयं, निज गुप्त वेश में आती है।
माता की अनुपम सेवा कर, बहु अतिशय पुण्य कमाती है।।
जब गूढ़ प्रश्न करती देवी, माता प्रत्युत्तर देती हैं।
त्रयज्ञानी सुत का ही प्रभाव, जो अनुपम उत्तर देती हैं।।7।।

इसविध से माता का माहात्म्य, प्रभु तुम प्रसाद से होता है।
तुम नाम मंत्र भी अद्भुत है, भविजन का अघ मल धोता है।।
मैं इसीलिए तुम शरण लिया, भगवन्! अब मेरी आश भरो।
निज ''ज्ञानमती'' संपति देकर, स्वामिन् अब मुझे कृतार्थ करो।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यः जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो पंचकल्याणक महापूजा महोत्सव को करें।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंचलब्धी को धरें।।
फिर पंचकल्याणक अधिप हो मुक्तिकन्या वश करें।
'सुज्ञानमति' रविकिरण से भविजन कमल विकसित करें।।1।।

पूजा नं.-2

जन्मकल्याणक पूजा

–स्थापना-गीता छंद –

जिन जन्मकल्याणक महोत्सव, इंद्रशत मिलकर करें।
सुरगिरि शिखर पर तीर्थकर का जन्मते अभिषव करें।।
इन तीर्थकर के जन्मकल्याणक जजें हम भाव से।
निज आत्म अनुभव प्राप्त हित आह्वान करते चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्ववाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-भुजंगप्रयात छंद –

तृषा चाह की है बुझी ना कभी भी।
इसी हेतु से नीर लाया प्रभु जी।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

महाताप संसार में मोह का है।
इसी हेतु से शीत चंदन घिसा है।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ सौख्य मेरा क्षणिक नाशवंता।
इसी हेतु से शालि को धोय संता।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोभू जगत में सभी को भ्रमावे।
इसी हेतु से पुष्प चरणों चढ़ावें।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधारोग सबसे बड़ा है जगत् में।
इसी हेतु नैवेद्य लाया सरस मैं।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाघोर अंधेर अज्ञान का ये।
इसी हेतु से दीप लौ जगमगावे।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा दुष्ट आठों करम संग लागे।
इसी हेतु से धूप खेऊँ यहाँ पे।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववांछीत फल हेतु घूमा अभी तक।
फलों को इसी हेतु अर्पूं प्रभू अब।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

महा अर्घ ले आप को पूजता हूँ।
महामोह के फंद से छूटता हूँ।।
जजूँ जन्मकल्याण तीर्थंकरों के।
करूँ जन्म साफल्य निज सौख्य पाके।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

तीर्थंकर परमेश, तुम पद पंकज में सदा।
जग में शांती हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

परम सौख्य आनंदमय, महापुण्य की राशि।
पुष्पांजलि चढ़ावते, मिले आत्मसुख राशि।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां ऋषभदेवजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशम्यां अजितनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिकपूर्णिमायां संभवनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां अभिनंदनजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां सुमतिनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां पद्मप्रभजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां सुपार्श्वनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां चंद्रप्रभजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां पुष्पदंतजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां शीतलनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रेयांसजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां वासुपूज्यजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां विमलनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां अनंतनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां धर्मनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां शांतिनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां कुंथुनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां अरनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां मल्लिनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वादश्यां मुनिसुव्रतजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां नमिनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां नेमिनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां पार्श्वनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां महावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

–पूर्णार्घ्य –

कुरुवंश शिरोमणि शांतिकुंथु, अर जिनवर जग में मान्य हुए।
मुनिसुव्रत नेमी हरिवंशी, श्रीपार्श्व उग्रकुल नाथ हुये।।
महावीर नाथवंशी बाकी, इक्ष्वाकुवंश भूषण मानें।
इन वंश पूजते वंश चले, वंदत संतान सौख्य ठाने।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

जै जै जिनेन्द्र आपने जब जन्म था लिया।
संपूर्णलोक में महा आश्चर्य भर दिया।।
सुरगृह में कल्पवृक्ष पुष्पवृष्टि कर झुकें।
देवों के सिंहासन भी आप आप कंप उठें।।1।।

शीतल सुगंध वायु मंद मंद बही थी।
पृथ्वी भी तो हिलने से मनों नाच रही थी।।
संपूर्ण दिशाएं गगन भी स्वच्छ हुए थे।
सागर भी तो लहरा रहा आनंद हुए से।।2।।

व्यंतर गृहों में भेरियों के शब्द हो उठे।
भवनालयों में शंख नाद गूंजने लगे।।
ज्योतिष गृहों में सिंहनाद स्वयं हो उठा।
सुरकल्पवासि भवन में घंटा भी बज उठा।।3।।

इंद्रों के मुकुट अग्र भी स्वयमेव झुक गये।
जिन जन्म जान आसनों से सब उतर गये।।
तब इंद्र के आदेश से सुर पंक्ति चल पड़ीं।
सबके हृदय में हर्ष की नदियाँ उमड़ पड़ीं।।4।।

सुरपति प्रभु को गोद में ले गज पे चढ़े हैं।
ईशान इंद्र प्रभु पे छत्र तान खड़े हैं।।
सानत्कुमार औ महेन्द्र चमर ढोरते।
सब देव देवियाँ बहुत भक्ति विभोर थे।।5।।

क्षण में सुमेरु गिरि पे जाके प्रभु को बिठाया।
पांडुक शिला पे नाथ का अभिषेक रचाया।।
सौधर्म इन्द्र ने हजार हाथ बनाये।
संपूर्ण स्वर्ण कलश एक साथ उठाये।।6।।

सबने प्रभु का न्हवन एक साथ कर दिया।
जय जय ध्वनी से देवों ने आकाश भर दिया।।
सब इंद्र औ इंद्राणियों ने न्हवन किया था।
सब देव औ देवांगनाओं ने भी किया था।।7।।

अभिषेक जल उस क्षण में पयोसिंधु बना था।
देवों की सेना डूब रही हर्ष घना था।।
जन्माभिषेक जिनका स्वयं, इंद्र कर रहे।
उत्सव विशेष और की फिर बात क्या कहें।।8।।

सुरपति ने पुनः प्रभु को लाके जनक को दिया।
बहुदेव और देवियाँ सेवा में रख दिया।।
सुर धन्य वे जो नाथ संग खेल खेलते।।
मिथ्यात्वशत्रु को भी वे घानी में पेलते।।9।।

मैं भी करूँ सेवा प्रभू की भक्ति भाव से।
मिथ्यात्व का निर्मूल हो समकित प्रभाव से।।
बस एक प्रार्थना पे नाथ! ध्यान दीजिए।
''सज्ज्ञानमती'' पूर्ण हो यह दान दीजिए।।10।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यः जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो पंचकल्याणक महापूजा महोत्सव को करें।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंच लब्धी को धरें।।
फिर पंचकल्याणक अधिप हो, मुक्तिकन्या वश करें।
'सुज्ञानमति' रविकिरण से भविजन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-3

तपकल्याणक पूजा

–स्थापना-नरेन्द्र छंद –

त्रिभुवन वंदित तीर्थंकर को, जब वैराग्य उदित हो।
लौकांतिक सुर आकर पूजें, मन में बहु प्रमुदित हो।।
उनके तप कल्याणक को मैं, भक्ति भाव से वंदूँ।
आह्वानन कर पूजन करके, कर्म शत्रु को खंडूं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्ववाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-नरेन्द्र छंद –

नंदावापी का निर्मल जल, कंचन भृंग भराऊँ।
श्रीजिनवर के चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरणकमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल तंदुल ले, तुम ढिग पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निज आतमपद पाऊँ।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदनवन के लताकुंज से, सुरभित पुष्प चुनाऊँ।
जिनवर चरणकमल में अर्पूं, निजगुण यश विकसाऊँ।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते, सब दुख व्याधि नशाऊँ।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञानज्योति उद्योतन।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म को दग्ध करूँ मैं, अग्नी संग जलाऊँ।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरस फल, लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते, परमानंद सुख पाऊँ।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, निज गुणमणि को पाऊँ।।
तीर्थंकर के तप कल्याणक, भक्ति भाव से पूजूँ।
निश्चय अरु व्यवहार रतनत्रय, पाकर भव से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

तीर्थंकर परमेश, तुम पदपंकज में सदा।
जग में शांती हेतु शांतिधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

अनंत चतुष्टय के धनी, तीर्थंकर चौबीस।
कुसुमांजलि कर पूजहूँ, नित्य नमाऊँ शीश।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिः क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां ऋषभदेवदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लानवम्यां अजितनाथ दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षपूर्णिमायां संभवनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां अभिनंदनजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां सुमतिनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां पद्मप्रभजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां सुपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां चन्द्रप्रभजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां पुष्पदंतनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां शीतलनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रेयांसजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां वासुपूज्यजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां विमलनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां अनंतनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां धर्मनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां शांतिनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां कुंथुनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां अरनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां मल्लिनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां मुनिसुव्रतजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां नमिनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां नेमिनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां पार्श्वनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां महावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

–पूर्णार्घ्य –

जिन ऋषभ इक्षुरस का आहार, तेइस जिन खीर आहार लिया।
सब जिनकी प्रथम पारणा में, सुरगण ने पंचाश्चर्य किया।।
सन्मति के सब आहारों में, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
अधिकाधिक बारहकोटि सु कम से कम वह बारह लाख कही।।

–दोहा –

चौबिस जिन दीक्षा दिवस, जजूँ भक्ति उरधार।
पाँच बालयति को नमूँ, मिले तपोनिधि सार।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरदीक्षाकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं तपःकल्याणकसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

नित्य निरंजन देव, परमहंस परमातमा।
करूँ चरण के सेव, तुम गुणमाला गायके।।1।।

–नरेन्द्र छंद –

चिन्मय ज्योति चिदंबर चेतन, चिच्चैतन्य सुधाकर।
जय जय चिन्मूरत चिंतामणि, चिंतितप्रद रत्नाकर।।
जब तुमको वैराग्य प्रगट हो, सुरपति आसन कंपे।
लौकांतिक सुरगण भी आते, पुष्पांजलि को अर्पें।।2।।

तीर्थंकर भगवान स्वयं ही दीक्षा लेते वन में।
सिद्धों की साक्षी से दीक्षा, गुरू नहिं उन जीवन में।।
दीक्षा लेते सामायिक संयम बस एक हि होवे।
त्रयज्ञानी प्रभु के मनपर्यय के ज्ञान उसी क्षण होवे।।3।।

मौन धरें प्रभु मुनि जीवन में दीक्षा भी नहिं देते।
नहीं शिष्य परिकर रखते प्रभु चतुर्मास नहिं करते।।
नहिं अतिचार दोष हों प्रभु से प्रायश्चित नहिं उनके।
वस्त्ररहित निर्ग्रंथ दिगम्बर अर्हत् मुद्रा उनके।।4।।

तीर्थंकर 'जिन' हैं साक्षात् हि सर्वोत्तम चर्या है।
'जिनकल्पी' मुनि उन अनुसारी जिनसम कहलाते हैं।।
जिस घर में आहार प्रभू का अक्षय भोजन होवे।
पंचाश्चर्य वृष्टि सुर करते रत्नन वर्षा होवे।।5।।

ध्यान धरें प्रभु कल्पवृक्ष सम खड़े विजन वन में हों।
निज आतम अनुभव रस पीकर परमानंद मगन हों।।
घोर तपश्चर्या करके प्रभु शुक्ल ध्यान को ध्याते।
क्षपकश्रेणि आरोहण करके घाती कर्म नशाते।।6।।

यद्यपि मैं व्यवहार नयाश्रित कर्मकलंक सहित हूँ।
जन्म-मरण के दुख सह-सहकर निज सुख से विरहित हूँ।।
फिर भी निश्चय नय आश्रय से शुद्ध बुद्ध चिद्रूपी।
परमानंद अतीन्द्रिय सुखमय दर्शन ज्ञान स्वरूपी।।7।।

वर्ण गंध रस स्पर्श शून्य मैं चिदानंद शुद्धात्मा।
संसारी होकर भी निश्चय नय से मैं परमात्मा।।
हे प्रभु ऐसी शक्ती दीजे तपश्चरण कर पाऊँ।
'ज्ञानमती' केवल करने को निज आतम को ध्याऊँ।।8।।

–दोहा –

तपकल्याणक को नमूँ, स्वात्मनिधि के हेतु।
जिनपूजा चिंतामणि, अजर अमर पद देत।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतपःकल्याणकेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो पंचकल्याणक महापूजा महोत्सव को करें।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंचलब्धी को धरें।।
फिर पंचकल्याणक अधिप हो मुक्तिकन्या वश करें।
'सुज्ञानमति' रविकिरण से भविजन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-4

केवलज्ञानकल्याणक पूजा

–स्थापना-शंभु छंद –

रत्नों के खंभों पर सुस्थित, मुक्तामालाओं से सुंदर।
श्रीमंडपभूमी के आगे त्रयकटनी हैं दिखती मनहर।।
सबसे ऊपर है गंधकुटी, कमलासन पर जिनवर शोभें।
हम उनका इत आह्वानन कर, पूजत ही भवदुख से छूटें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-चाल नंदीश्वर पूजा –

यमुना नदि का शुचि नीर, झारी पूर्ण भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि तीर, तुम पद धार करूँ।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सार, गंध सुगंध करे।
चर्चूं जिनपद सुखकार, मन की तपन हरे।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वलवर अक्षय लाय, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज अक्षय पद को पाय, यहाँ न आऊँ मैं।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला मचकुंद गुलाब, चुन चुन के लाऊँ।
अर्पूं प्रभु के पादाब्ज, निज सुख यश पाऊँ।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं लड्डू मोतीचूर, थाली भर लाऊँ।
हो क्षुधा वेदनी दूर, अर्पत सुख पाऊँ।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय दीपक की ज्योति, जग अंधेर हरे।
मुझ मोह तिमिर हर ज्योति, ज्ञान उद्योत करे।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप , खेऊँ अग्नी में।
उड़ती दशदिश में धूम्र, फैले यश जग में।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंगूर अनार, श्रीफल भर थाली।
अर्पूं जिन आगे सार, मनरथ नहिं खाली।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ बनाय, उसमें रत्न मिला।
जिन आगे नित्य चढ़ाय, पाऊँ सिद्ध शिला।।
तीर्थंकर केवलज्ञान, कल्याणक पूजूँ।
हो स्वपर भेद विज्ञान, कर्मों से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

तीर्थंकर परमेश, तुम पद पंकज में सदा।
जग में शांती हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

ज्ञाननेत्र से लोकते, लोक अलोक समस्त।
चौबीसों जिनराज सम, शिवपथ करो प्रशस्त।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां ऋषभदेवकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाएकादश्यां अजितनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां संभवनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां अभिनंदनजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां सुमतिनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापूर्णिमायां पद्मप्रभजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां सुपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां चंद्रप्रभजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां पुष्पदंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां शीतलनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाअमावस्यां श्रेयांसनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां वासुपूज्यजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां विमलनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां धर्मनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां शांतिनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयायां कुंथुनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां अरनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां मल्लिनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां मुनिसुव्रतनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां नमिनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां नेमिनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्दश्यां पार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां महावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

–पूर्णार्घ्य –

केवलज्ञानी के श्री विहार, उपदेश क्रिया स्वयमेव घटें।
बिन इच्छा प्रभु की ध्वनि खिरती, भव्यों का हो पुण्य जबें।।
भूख तृषादिक बाधा नहिं, अतएव न कवलाहार उन्हें।
भक्ति भाव से मैं नित पूजूँ, केवलज्ञान कल्याण दिने।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं केवलज्ञानकल्याणकसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योः नमः।**

जयमाला

–दोहा –

अतिअद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम धुनि सुन भविवृन्द नित, हरें सकल संताप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय त्रिभुवन पति का वैभव, अन्तर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्श ज्ञान सुख वीर्य रूप, आनन्त्य चतुष्टय निधिमय है।।
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानी।
जब गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी।।2।।

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
द्वादश योजन उत्कृष्ट कही, इक योजन हो घटते क्रम से।।
यह भूमि कमल आकार कही, जो इंद्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।

पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, दर्पण तल सम रुचि धारे है।।
सब बीस हजार हाथ ऊँचा, यह समवसरण अति शोभे है।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोहै।।4।।

पंगू अंधे रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महावीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तंभ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।

इक योजन से कुछ अधिक तुँग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें है दो हजार पहलू, स्फटिक मणि के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मानस्तंभों की सीढ़ी पर लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।

ये अस्सी कोशों तक सचमुच, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तंभों के चारों दिश, जल पूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अति सुन्दर कमल खिलें, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।

ये प्रभु का सन्निध पा करके, ही मान गलित कर पाते हैं।
अतएव सभी अतिशय भगवन्! तेरा ही गुरुजन गाते हैं।।
मैं भी प्रभु तुम सन्निध पाकर, सम्पूर्ण कषायों को नाशूँ।
प्रभु ऐसा वह दिन कब आवे, जब निज में निज को परकाशूँ।।8।।

जिननाथ! कामना पूर्ण करो, निज चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित स्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती', तब तक मन मन तुम पद ध्यावे।।9।।

–दोहा –

तीर्थंकर गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।10।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो पंचकल्याणक महापूजा महोत्सव को करें।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंच लब्धी को धरें।।
फिर पंचकल्याणक अधिप हो मुक्तिकन्या वश करें।
'सुज्ञानमति' रविकिरण से भविजन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-5

मोक्षकल्याणक पूजा

–स्थापना-शंभु छंद –

आठों विध कर्म नाश करके, अष्टम पृथ्वी को पाया है।
गुण आठ प्रधान अनंतानंत, गुणों को भी प्रकटाया है।।
परमानंदामृत आस्वादी, सिद्धालय में प्रभु तिष्ठ रहें।
ऐसे जिनवर की पूजा कर, हम भी निज सौख्य प्रसिद्ध लहें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-गीता छंद –

क्षीरोदधी का नीर पय सम, स्वर्णझारी मैं भरूँ।
निज कर्म पंक्ति धोवने को, नाथपद धारा करूँ।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय चिदंबर चित्पुरुष तीर्थेश के पादाब्ज को।
शुभ गंध से चर्चन करूँ, मुझको सुगुण यश प्राप्त हो।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य चिंतामणि जिनेश्वर को रिझाऊँ भक्ति से।
उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल पुंज अर्पूं युक्ति से।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली केवड़ा, सुरभित कुसुम अर्पण करूँ।
जिनराज पारसमणि जजत निज आत्म को कंचन करूँ।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी इमरती रसभरी मिष्टान्न से भर थाल को।
निज आत्म अमृत स्वाद हेतू मैं चढ़ाऊँ नाथ को।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती स्वर्ण दीपक में दिपे सब तम हरे।
निज ज्ञान ज्योती हो प्रगट इस हेतु हम आरति करें।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित दशांगी धूप खेऊँ धूप घट की अग्नि में।
निज आत्म यश सौरभ उठे सुख शांति फैले विश्व में।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमृत फल सरस फल अर्प कर प्रभु पूजते।
स्वात्मैक परमानंद अमृत प्राप्त हो जिनभक्ति से।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत आदि लेकर अर्घ भर कर में लिया।
निज रत्नत्रय निधि लाभ हेतु नाथ को अर्पण किया।।
तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक, जजूँ नित भाव से।
निज सुख अतीन्द्रिय प्राप्त हेतू, सिद्ध पूजूँ चाव से।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

तीर्थंकर परमेश, तुम पद पंकज में सदा।
जग में शांती हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दशदिशा।
तीर्थंकर पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

चिंतित फल देवो, मुझे, चिच्चिंतामणि रत्न।
पुष्पांजलि से पूजते, मिलें शीघ्र त्रयरत्न।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां ऋषभदेवमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचम्यां अजितनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठ्यां संभवनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां अभिनंदननाथ मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां सुमतिनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थ्यां पद्मप्रभजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां सुपार्श्वनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां चंद्रप्रभजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।
ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाअष्टम्यां पुष्पदंतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।
ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाअष्टम्यां शीतलनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां श्रेयांसनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।
ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां वासुपूज्यजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।
ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाअष्टम्यां विमलनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां अनंतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां धर्मनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां शांतिनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां कुंथुनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां अरनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां मल्लिनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां मुनिसुव्रतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां नमिनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां नेमिनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां पार्श्वनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां महावीरजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

–पूर्णार्घ्य-चौबोल छंद –

श्रीऋषभदेव चौदह दिन योग निरोधा नहीं विहार किया।
दो दिन तक वीर प्रभू बाइस जिन योग रोध इक माह किया।।
श्री ऋषभ वासुपूज नेमिनाथ पर्यंकासन से मुक्त हुये।
शेष सभी तीर्थंकर कायोत्सर्गासन से सिद्ध हुए।।

–दोहा –

चौबिस जिनकी मुक्तितिथि, मुक्तिस्थान पवित्र।
नमूँ नमूँ नितभाव से, होवे चित्त पवित्र।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

स्वात्म सुधारस सौख्यप्रद, परमाह्लाद करंत।
गाऊँ जिनगुण मालिका, हो मुझ शांति अनंत।।1।।

–गीता छंद –

जय जय जिनेश्वर तीर्थंकर प्रभु सिद्ध पद को पा लिया।
जय जय जिनेश्वर सर्व हितकर मोक्षमार्ग दिखा दिया।।
संपूर्ण कर्म विनाश कर कृतकृत्य त्रिभुवनपति बने।
यममल्ल को भी चूर कर प्रभु आप मृत्युंजयि बने।।2।।

तत्क्षण ऋजूगति से प्रभो लोकांत में जाकर बसें।
धर्मास्तिकाय अभाव से उससे उपरि नहिं जा सकें।।
तब इंद्रगण ने मोक्षकल्याणक मनाया हर्ष से।
चउविध असंख्यों देव ने उत्सव किया अतिभक्ति से।।3।।

देवेन्द्र ने त्रय कुंड की रचना करी विधिवत् वहाँ।
तीर्थेश का चौकोन कुण्ड सुगार्हपत्य कहा महा।।
इसमें जिनेश्वर देह का संस्कार करने हेतु से।
अग्नी प्रगट की मुकुट से अग्नीकुमार सुरेन्द्र ने।।4।।

गणधर सुकुंड त्रिकोन आह्वनीय अग्नी से दिपे।
सामान्य केवलि मुनी का है गोल कुंड समीप में।।
इसमें अगनि है दक्षिणाग्नी नाम इन त्रय कुंड में।
जो अग्नि भी वह भी वहाँ पूजित हुई सुरवृंद से।।5।।

निर्वाणकल्याणक समय की अग्नि भी तो पूज्य है।
देवेन्द्र ने वर्णन किया, यह कहे आदि पुराण है।।
जिनवर शरीर स्पर्श से सब क्षेत्र पर्वत पूज्य हैं।
जिनवर चरण की धूलि से पृथ्वी कहाती तीर्थ है।।6।।

सब इंद्रगण मिलकर वहाँ आनंद नृत्य किया तभी।
खुशियाँ मनाई भक्ति से स्तव किया बहुविध सभी।।
भगवन्! मुझे भी शक्ति ऐसी दीजिए यांचा करूँ।
पंडित सुपंडित मरण ऐसा मिले यह वांछा करूँ।।7।।

इस विध सुरासुर इंद्रगण गणधर गुरू मुनिगण सभी।
चक्राधिपति बलदेव नारायण मनुज मांगे सभी।।
फिर-फिर करें यांचा प्रभू से हर्ष से जय जय करें।
निर्वाणकल्याणक महोत्सव कर सफल निज भव करें।।8।।

मैं भी यहाँ पर नाथ के निर्वाण की पूजा करूँ।
मोहारि नाशन हेतु भगवन्! आपकी अर्चा करूँ।।
धनि धन्य है यह शुभ घड़ी धनि धन्य मेरा जन्म है।
धनि धन्य हैं ये नेत्र मेरे धन्य मेरा कंठ है।।9।।

प्रभु आप भक्ती से मुझे निज तत्त्व का श्रद्धान हो।
निज तत्त्व परमानंद में रम जाऊँ यह वरदान दो।।
आनन्त्य दर्शन ज्ञान सुख वीरजमयी निजआतमा।
कैवल्य 'ज्ञानमती' सहित बन जाऊँ मैं परमात्मा।।10।।

–घत्ता –

जय जय तीर्थंकर, सर्वहितंकर, त्रिभुवन गुरुवर नित्य नमूँ।
निर्वाण कल्याणक, निजसुखदायक, भवदुखघातक नित प्रणमूँ।।11।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणकल्याणकेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो पंचकल्याणक महापूजा महोत्सव को करें।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंच लब्धी को धरें।।
फिर पंचकल्याणक अधिप हो मुक्ति कन्या वश करें।
'सुज्ञानमति' रविकिरण से भविजन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पंचकल्याणक विधान प्रशस्ति

चौबीस तीर्थंकर को वंदूँ माँ सरस्वती को नमन करूँ।
गणधर गुरु के सब साधू के श्री चरणों में नित शीश धरूँ।।
इस युग में कुंदकुंदसूरी, का अन्वय जगत् प्रसिद्ध हुआ।
इसमें सरस्वती गच्छ बलात्कारगण अतिशायि समृद्ध हुआ।।1।।

इस परम्परा में साधु मार्ग, उद्धारक दिग्अंबर धारी।
आचार्य शांतिसागर चारित्र-चक्रवर्ती पद के धारी।।
इन गुरु के पट्टाधीश हुए, आचार्य वीरसागर गुरुवर।
इनकी मैं शिष्या गणिनी-ज्ञानमती आर्यिका प्रथित भू पर।।2।।

वीराब्द पच्चीस शतक सत्रह, भादों वदि प्रतिपद तिथि शुभतम।
सरधना ग्राम उत्तर प्रदेश में, सोलह कारण व्रत उत्तम।।
यह पंचकल्याणक का विधान, भक्ती से मैंने पूर्ण किया।
चौबीस तीर्थंकर के पाँचों, कल्याणक का स्तवन किया।।3।।

उत्तर पुराण के आश्रय से, इस पूजा में तिथियाँ ली हैं।
इन तिथियों की पूजा रचना, जिनवरगुण की निधियाँ सी हैं।।
मैंने जिनवर की भक्तीवश, बहुतेक विधान रचें सुंदर।
इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र पूजा मनहर।।4।।

श्री जम्बूद्वीप व तीनलोक, आदिक विधान जगमान्य हुए।
भक्तीप्रधान इस युग में तो, भक्तों को अतिशय मान्य हुए।।
श्री पंचकल्याणक यह विधान, भव्यों को अतिशय प्रिय होवे।
जब तक जिनधर्म रहे जग में, तब तक भक्तों को अघ धोवे।।5।।

।।इति पंचकल्याणक विधानम्।।

आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –आरति करूँ चौबीस जिनवर (मराठी)

आरति करूँ चौबिस जिनवर की, आरति करूँ प्रभु जी।।टेक.।।

पहली आरति गर्भकल्याणक-2
पन्द्रह मास रतनवृष्टी की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।1।।

दूजी आरति जन्मोत्सव की-2
मेरु सुदर्शन पर अभिषव की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।2।।

तीजी है निष्क्रमण दिवस की-2
लौकांतिक सुर अनुमोदन की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।3।।

चौथी आरति केवली प्रभु की-2
द्वादश गण युत समवसरण की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।4।।

पंचम आरति पंचम गति की-2
मोक्ष धाम संयुत जिनवर की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।5।।

पंचकल्याणकपति प्रभु तुम हो-2
नाश किया संसार भ्रमण को, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।6।।

आरति से भव आरत छुटता-2
करे 'चन्दना' वन्दन प्रभु का, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।7।।